काशीरा-लैला -3

“चचाजी कमर उचका रहे थे, मेरे मुँह में लंड पेलने की कोशिश कर रहे थे 'अरे चूसने दे बहू, बहुत अच्छा चूसता है ये छोकरा.. सीख जायेगा जल्दी... क्या साले बदमाश हरामी हो तुम दोनों.. आज तुम दोनों को चोद दूंगा.. साले हरामियो.. बिस्तर पर पास पास लिटा कर आज दोनों को चोदूँगा !' ...”

Story By: imran hindi (imranhindi)
Posted: Tuesday, June 7th, 2011
Categories: रिश्तों में चुदाई
Online version: काशीरा-लैला -3

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

काशीरा-लैला -3

चाची ने मुझे सीने से लगा लिया और थपथपा कर छोटे बच्चे जैसे सुला दिया।

सुबह सब देर से उठे। मैं चाची के कमरे के बाहर आया तो काशीरा भी जाग गई थी, चाय बना रही थी। जब चाय लेकर मेरे पास आई तो पैर चौड़े करके चल रही थी।
'क्यों रानी, बना दिया भुरता चचा ने तेरी चूत का ? हो गई तसल्ली ?' मैंने उसे चूम के कहा।
'हाँ डार्लिंग, बहुत दिनों बाद मेरी चूत को किसी ने ऐसे धुना है। लाजवाब चीज है चचाजान का लंड, मैंने तो रात भर नहीं छोड़ा उनको, अभी उठने के पहले एक बार और चुदवा कर आई हूँ। यह देखो !' काशीरा ने गाउन उठाकर चूत दिखाई। चुद चुद कर काशीरा की बुर लाल हो गई थी और पपोटे सूज कर गुलाब की कली से लग रहे थे। चूत में से सफ़ेद सफ़ेद वीर्य टपक रहा था।

मैं तुरंत उठा और काशीरा के सामने बैठ कर उसकी बुर चाट डाली।

काशीरा बोली- मेरा शुक्रिया अदा करो, तुम्हारे लिये ले कर आई हूँ ये मलाई। अब तुम कहो, तुम मुँह मार आये चाची के बदन में ? मजा आया ?
'अरे चाची याने मैदे का गोला है, खोवा है खोवा। और तेरी भी आशिक है, कह रही थीं कि बहू को कह कि इस खोवे को चख के देख जरा !'
'हां, मेरा भी मन हो रहा है। आज क्या प्रोग्राम है ?'

'चचा-चची आज जा रहे हैं दिन भर के लिये चाची के मायके। रात में वापस आयेंगे, दोपहर को हम भी आराम कर लेते हैं, फ़िर ऐसा करेंगे कि आज रात दोनों मिलकर उनकी सेवा करेंगे, ठीक है ना ?'

‘हाँ ठीक है, मैं जानती हूँ कि तुम भी मरे जा रहे हो चचा के गन्ने का रस चखने को। ऐसा करो, आज मरवा भी लो !’ काशीरा शैतानी से बोली।
‘अरे नहीं, मैं तो चूसूँगा सिर्फ़, गांड फ़ड़वानी है क्या !’ मैंने कहा।

‘पर देखो, तुम्हारा तंबू बन गया फ़िर से लंड की बात सुन कर। आज तो मरवा ही लो। नहीं मरवाओगे तो मैं झगड़ा कर लूंगी। मेरी कसम !’ काशीरा बोली।
‘तुम अच्छी पीछे पड़ गई मेरी गांड के, तुमको क्या मजा आयेगा चचाजी मेरी गांड चौड़ी करेंगे तो ?’
‘तुम नहीं जानते, मेरे सामने कोई मेरे मर्द को चोदे तो मुझे बहुत मजा आयेगा। और झूठ मत बोलो, वहाँ उस दिन उस्मान और सलमा के साथ हम थे और उस्मान ने तुम्हारी गांड मारी थी तो कैसे गुनगुना रहे थे ?’

‘अरे वो तुम और सलमा पीछे पड़ गई थीं कि जब हम दोनों औरतें आपस में कर सकती हैं तो तुम मर्द क्यों नहीं करके दिखाते। इसलिये मरवा ली थी मैंने। और अजीब बात करती हो, मैं क्या खुद चचाजी से कहूँ कि मेरी गांड मार लीजिये चचाजी, वो उस्मान से तो शर्त शर्त में मरवा ली थी मैंने !’

‘पर कैसे चहक रहे थे जब उस्मान तुम्हारी गांड में लंड पेल रहा था। आह आह कर रहे थे और कमर हिला हिला कर मरवा रहे थे। और उस्मान का तो तुमसे भी छोटा है। उससे इतना मजा आया तुमको तो चचाजी का लंड तो तुमको जन्नत की सैर करवा देगा। आज ले ही लो चचाजी का, मेरी कसम। मैं चक्कर चला दूँगी आज चचाजी से तुम्हारे बारे में कह के, तुम्हें शरमाने की जरूरत नहीं है। कल मेरी गांड मारने को मरे जा रहे थे पर मैंने घास नहीं डाली, उनको कहा कि गांड के लिये कल का इंतजार करो। ये नहीं बताया कि किसकी गांड।’

मैंने आखिर हाँ कर दी। काशीरा मेरे मन की बात ताड़ गई थी, उससे कुछ नहीं छुपता। यह

कहानी आप अन्तर्वासना.कॉम पर पढ़ रहे हैं।
रात को चचा चाची वापस आये और नहाने को चले गये। खाना वे खाकर आये थे।

चाची ने नहाने जाने के पहले काशीरा से कुछ बातें कीं। काशीरा मुस्कराने लगी।
चचा नहाने जाते वक्त काशीरा से बोले- क्यों बहू, आज भी कुछ सेवा करेगी अपने चचाजी की ? कल रात तो तूने मुझे एकदम खुश कर दिया।
'खुश तो आप ने मुझे किया चचाजी। आप नहाइये, मैं आती हूँ आपके कमरे में !' काशीरा बोली।

काशीरा हमारे बेडरूम में गई तो मैं भी पीछे पीछे हो लिया। अंदर काशीरा कपड़े उतार रही थी। जब ब्रा और पैंटी बची तो वो अपने बाल संवारने लगी।
'नंगी नहीं होगी क्या आज रानी ?'
'नहीं, ऐसे ही जाऊँगी, जरा चचाजी को तरसाऊँगी। तुम कपड़े निकालो और दरवाजे पे खड़े रहो, जब मैं बुलाऊँ तो आना। आज चचा से अपने भतीजे के लाड़ मैं करवा के रहूँगी।'
'और चाची ?'
'अरे तुम तो चलो, चाची आ जायेंगी। उन्होंने ही कहा मुझे कि इमरान को जरा मिलवा दे चचा से, नहीं तो शरमाता रहेगा !'

काशीरा चचाजी के कमरे में गई, मैं बाहर खड़ा होकर की-होल में से देखने लगा।
चचाजान नहा कर तरोताजा होकर आराम कुरसी में नंगे बैठे थे और अपने लण्ड से खेल रहे थे। लंड पूरा खड़ा था, देख कर मेरे मुँह में पानी भर आया, गांड में अजीब से गुदगुदी होने लगी।
'आओ बहू, तुम्हारी ही राह देख रहा था। क्या दिख रही हो ब्रा और पैंटी में, लगता है पकड़ के यहीं पटक दूँ और चोद डालूँ !' चचा मस्ती से बोले।
'वो तो करना ही है चचाजी पर आप बहुत जल्दी करते हैं, आप आराम से बैठो और मुझे

जरा आपके लंड की ठीक से पूजा करने दो, कल जल्दी जल्दी में ठीक से इससे खेल भी नहीं पाई !'
'अजीब लड़की हो, रात भर चुदवाया और कहती हो कि…'

'पर खेला कहाँ चचाजी ? मेरा मतलब है कि ऐसे !' काशीरा चचाजी के सामने बैठ कर उनके लंड को चूमने लगी, उससे तरह तरह के खेल करने लगी, कभी जीभ से चाटती, कभी चूसती, कभी अपनी ब्रा के कपों के बीच पकड़कर अपने चूचियों से चोदने लगती।

'आह..! क्या मजा आ रहा है बहू.. देख ये और खड़ा हो जायेगा.. फ़िर आज तेरी चूत जरूर चीर देगा… कल तो तू बच गई… आह.. कितने प्यार से चूसती है बहू.. बड़ी दीवानी हो गई है मेरे लंड की !'

'चचाजी, सिर्फ़ मैं ही दीवानी नहीं हूँ आपके इस मूसल की ! कोई और भी है। आपका लंड तो ऐसा है कि कोई भी पागल हो जाये इस पर !' काशीरा अपने गालों पर उनके सुपारे को रगड़ते हुए बोली।

'कौन है बेटी, चाहिये तो उसे भी बुला ला। अरे मेरा लंड तो बना ही है तेरे जैसी छिनाल चुदैलों के लिये !' चचाजी काशीरा की पीठ पर हाथ फ़िराते हुए बोले। फ़िर उसकी ब्रा की डोरी से खेलने लगे- 'ले आ उसे भी, खुश कर दूँगा उसको भी, तेरी सहेली है क्या कोई ? या पड़ोस वाली ? पर उसने कहाँ देखा मेरा लंड ?'

'नहीं चचाजी, यहीं घर में है। मैंने उससे कहा भी कि शरमाने की क्या बात है, पर वो झिझक रहा था, बोल रहा था आप न जाने क्या सोचें। कल इसीलिये तो रुका था कि आपके लंड को देख ले, आप मुझको चोद रहे थे और मजा उसको आ रहा था !' काशीरा बोली।
'अरे .. तू इमरान की बात कर रही है क्या ?' चचाजी बोले। फ़िर मुस्करा कर बोले 'अरे बुला ले ना उसको, अजीब लड़का है, अरे घर की बात है, मैं उसको ना थोड़े ही करूँगा। अच्छा

खासा लौंडा है, चिकना भी है। कल हमारी चुदाई देख देख कर सड़का लगा रहा था। याने मेरे लंड को देखकर मस्त हो रहा था वो बदमाश ! लंडों का शौकीन है क्या ?’

‘सब लंडों का नहीं चचाजी, बस आप जैसे खास लंडों का। बोल रहा था कि काशीरा रानी, चचा तुझे चोद रहे थे तब ऐसा लग रहा था कि काश मैं भी लड़की होता। आपने देखा नहीं कैसे लपालप मेरी बुर में से आपकी मलाई चाट रहा था !’ काशीरा बोली और अपने ब्रा के कपों में लंड पकड़कर घिसने लगी।

‘अरी बुला ना उसको, उसे भी मजा कर लेने दे। इस लंड से तुम दोनों मिंया-बीवी को सुख मिले इससे ज्यादा खुशी की बात क्या हो सकती है मेरे लिये !’ चचा बोले।

‘इमरान राजा, आ जाओ, मत शरमाओ, मैं कह रही थी ना कि चचा तुमको भी उतना ही प्यार करते हैं !’ काशीरा चिल्लाई। मैंने चेहरे पर झूठ मूठ का शर्मिंदगी का भाव लाया और अंदर आकर काशीरा के पास बैठ गया। नीचे देखते हुए मैंने चचाजी का लंड पकड़ा और सहलाने लगा।

‘इमरान, पहले आ और मेरे पास बैठ। यह क्या बात हुई, तू मुझे पराया समझता है क्या ? अरे कल ही कह देता, मैं तुझे भी खुश कर देता, बदमाश कहीं का। शरमा क्यों रहा है ? तेरे चचाजी की हर चीज तेरी है।’ चचाजान मेरा कान पकड़कर उठाते हुए बोले, उनकी बांछें खिल गई थीं।

मैं उठकर नीचे देखता हुआ उनके पास बैठ गया। चचाजी ने मुझे पास खींच लिया ‘वैसे लौंडा तू बड़ा चिकना है। मैं भी तेरी चाची से कह रहा था कि इमरान लड़की होता तो बहुत मस्त दिखता।’ उन्होंने एक हाथ में मेरा लंड पकड़ लिया था। ‘लंड तेरा भी मस्त है, एकदम कड़क है।’

‘आपका लंड तो पूजा करने लायक है अहमद चचा। क्या मस्त सोंटा है, रसीला गन्ना है गन्ना, चूस लेने को जी करता है।’ मैं उनसे लिपट कर बोला।

‘तो चूस ले मेरी जान, मैं कहाँ मना करता हूँ। पर पहले एक चुम्मा दे !’ कहकर उन्होंने मेरे होंठों पर होंठ रख दिये और चूमने लगे। एक हाथ से वे मेरी पीठ सहला रहे थे। मैंने कुछ देर उनको अपने होंठ चूमने दिये, फ़िर उनके गले में बाहें डाल कर उनको जोर जोर से चूमने लगा।

धीरे धीरे उनका हाथ मेरी पीठ पर से नीचे खिसक कर मेरे चूतड़ सहलाने लगा। काशीरा नीचे बैठ कर देख रही थी, मुझे आंख मार दी, इशारा कर रही थी कि लो, चचाजी भी रीझ गये हैं तेरे पर !

‘चचा… अब चूसने दीजिये ना.. मुँह में लेकर गन्ने जैसा चूसूँगा मैं !’ मैंने चुम्बन तोड़ कर चचाजी से लिपट कर कहा।
‘मजा आ रहा है इमरान, तेरा चुम्मा बहू जैसा ही मीठा है पर ठीक है, बाद में फ़ुरसत से तुझसे प्यार मुहब्बत की बातें करूँगा, ले, लंड चूस ले मेरा, काशीरा देखो कैसे पिली पड़ रही है, खा ही जायेगी जैसे !’ चचा बोले।

मैं उठा और थोड़ी देर चचा की ओर पीठ करके खड़ा रहा कि उनको मेरे गोरे कसे चूतड़ ठीक से दिखें। कनखियों से पीछे देखा तो चचाजी मेरे चूतड़ों पर नजर गड़ा कर देख रहे थे।

मैं फ़िर काशीरा के पास बैठ गया और हम दोनों मिलकर चचाजी के लंड से खेलने लगे।
‘बहुत बड़ा है काशीरा, नौ दस इंच का होगा, तेरी चूत को तो चीर दिया होगा कल इसने !’ मैंने काशीरा से कहा।
‘हाँ राजा, जान निकाल दी पर तेरी कसम क्या लुत्फ़ आ रहा था इससे चुदने में !’ काशीरा बोली।

‘यह सुपारा तो देख, टमाटर है टमाटर !’
‘तो चूस लो ना, कल से तो रिरिया रहे हो’ काशीरा बोली। मैंने झट मुँह खोल के सुपारा मुँह में भर लिया और चूसने लगा।
‘आह… चूस मेरे बेटे… मस्त चूसता है तू !’ चचा मेरा सिर पकड़कर बोले।
‘छोड़ो जी अब, अब मैं चूसूंगी !’ काशीरा बोली।

‘अरी ठहर, जरा ठीक से पूरा चखने तो दे, देख कैसा मस्त डंडा है, एकदम गन्ना है गन्ना !’ कहकर मैंने चचाजी का लंड उनके पेट से सटाया और उसका निचला भाग चाटने लगा।

चचाजी की सांस जोर से चलने लगी- ‘क्या जादू है इमरान तेरी जीभ में.. बहू… तेरा ये घरवाला भी बड़ा रसिया लगता है… आह.. और चाट बेटे.. ऊपर वहाँ थोड़ा और… हाँ… बस इधर ही… आह… साला मस्त लौंडा है, लंड चूसने की कला जानता है.. पहले पता होता तो इसको कब का चोद दिया होता मैंने !’ चचाजी मस्त हो कर ऊपर नीचे होने लगे।

काशीरा ने लंड मुझसे छीन कर अपने हाथ में लिया और बाजू से चाटने लगी। फ़िर पूरा मुँह में ले लिया और मुँह ऊपर नीचे करके लंड चूसने लगी।
‘ओह .. ओह .. क्या चूसती है ये हरामजादी रंडी… अरे तेरी चाची को भी सीखने में महना लग गया था, दम घुट कर गों गों करने लगती थी.. आह…’

काशीरा ने लंड मुँह से निकाला तो मैंने उसे मुँह में ले लिया। फ़िर मुँह खोल कर पूरा लंड निगलने की कोशिश करने लगा।
‘यह आपका भतीजा भी कम नहीं है चचाजी, देखिये कैसे लंड निगलने की कोशिश कर रहा है। इमरान मेरे सैंया, इतना बड़ा लंड चूसना तेरे बस की बात नहीं है।’ काशीरा ने ताना मारा।

चचाजी कमर उचका रहे थे, मेरे मुँह में लंड पेलने की कोशिश कर रहे थे ‘अरे चूसने दे बहू,

बहुत अच्छा चूसता है ये छोकरा.. सीख जायेगा जल्दी… क्या साले बदमाश हरामी हो तुम दोनों.. आज तुम दोनों को चोद दूंगा.. साले हरामियो.. बिस्तर पर पास पास लिटा कर आज दोनों को चोदूँगा !’

‘हाँ चचाजी, चोद देना आज फ़िर से .. मेरी तो चूत फ़िर कुलबुला रही है.. पहले आप के गन्ने का रस पियेंगे… फ़िर चुदवायेंगे।’काशीरा बोली और मुझ से लंड छीन कर चूसने लगी।
हमने बारी बारी चचाजी का लंड चूसा और उनको बहुत देर तरसाया। काशीरा इसमें माहिर थी, मैं भी सीख रहा था, चचाजी झड़ने को आते तो हम रुक जाते थे।

‘साले मादरचोद भोसड़ी वाले… चूसो ना… अबे हरामियो… जान बूझ कर तड़पा रहे हो अपने चचा को… आज गाढ़ी मलाई चखाऊँगा तुम दोनों को… ये जो माल है वो सबके… नसीब में नहीं… है.. इमरान मेरी जान.. चूस ले ना बेटे.. तू ही चूस ले… तेरी ये रंडी बीवी तो साली हरामन है… आह… ओह !’
काशीरा ने मेरे कान में धीरे से पूछा- झड़ा दूं या रुक जाऊं ? बहुत मस्त खड़ा है, घोड़े के लंड जैसा, अब मरवा लो, बहुत मजा आयेगा।

मैंने मना कर दिया- मर जाऊँगा, एक बार झड़ जाने दो चचाजी को, फ़िर सह लूंगा।
मैं धीरे से बोला।
‘अब चूस डालो मेरे बच्चो.. बहू… अब नहीं चूसा तो पटक के तेरी गांड मार लूंगा मां कसम !’ चचाजी मचल कर बोले।

काशीरा ने इशारा किया और मैंने चचाजी का लंड जितना हो सकता था उतना मुँह में भर लिया। फ़िर जीभ उनके सुपाड़े पर रगड़ रगड़कर चूसने लगा।
काशीरा बोली- मेरी गांड मारेंगे ? राह देखिये चचाजी, मैं क्यों गांड मरवाऊं ? नहीं बाबा, मैं तो बस चुदवाऊंगी। गांड का बहुत शौक है चचाजी ?

चचाजी मेरे सिर को पकड़कर ऊपर नीचे होने लगे- हाँ.. मजा आता है.. गांड जिस ताकत से.. लंड को पकड़ती है… मजा आ जाता है… तेरी चाची की बहुत मारी है मैंने.. अब साली ढीली हो गई है.. मां कसम कोई नई कुंवारी गांड मिल जाये तो… आह… आह ! चूस इमरान.. ऐसे ही चूस मेरे राजा !’

‘तो इमरान की मार लो चचाजी, मेरे से कम नहीं है, एकदम गोरी गोरी और कसी हुई है, मजा आयेगा आपको, सोचो अगर आप अपने भतीजे पर चढ़ कर उसकी मार रहे हो तो कैसा लगेगा !’ काशीरा ने उनको उकसाया

‘हाँ.. इमरान की भी लाजवाब है… अभी देखी तो सोचा कि क्या गोरी गोरी गांड है इस लड़के की… साला गांडू लौंडा… पहले पता चलता तो… बचपन में ही चोद डालता साले को… मेरे यहाँ आकर रहता था छुट्टियों में.. आह.. ओह.. ओह.. ओह…’
करके कसमसा कर चचाजी झड़ गये। उनके घी जैसे वीर्य से मेरा मुँह भर गया। मैं चख चख कर खाने लगा और साथ ही उनका सुपारा जीभ से रगड़ता रहा।

‘बस बेटे… बस.. अब मत कर ! अरे कैसा तो भी होता है.. बहू.. बहू देख ना इसको.. जीभ रगड़ रहा है नालायक… अरे सहन नहीं होता मेरे बेटे… छोड़ ना…’ चचाजी अपने लंड को मेरे मुँह से निकालने कोई कोशिश करने लगे, उनके झड़े लंड को मेरी जीभ की मालिश सहन नहीं हो रही थी।

‘चूसने दो चचाजी, कब से बेचारा आस लगाये था, अभी मस्ती में है, अभी मत टोको, मचल जायेगा तो काट खायेगा.. एक बार ऐसे ही मेरी बुर चूसते हुए मेरे दाने को रगड़ रहा था.. मैंने मना किया तो चूत को ही काट लिया, दो दिन दर्द रहा !’ काशीरा उनको डराते हुए बोली।
असल में बात झूटी थी, मैं ऐसा कभी नहीं करता काशीरा के साथ !

पर चचाजी पर उसका असर हुआ, वे चुपचाप 'सी-सी' करते हुए बैठ गये, मैंने मन भर के उनका वीर्य पिया और बूंद बूंद निचोड़ ली।

'वाह.. भतीजे के लाड़ दुलार चल रहे हैं, उसे मलाई खिलाई जा रही है, चलो अच्छा हुआ, मैं भी कहूँ कि ये कहाँ का न्याय है कि बहू पे इतनी मुहब्बत जता रहे हो और बेचारे भतीजे को सूखा सूखा छोड़ दिया कल रात !' चाची की आवाज आई।
कहानी चलती रहेगी।
2873

Other stories you may be interested in

अन्तर्वासना पाठक का अजेय लंड

दोस्तो, मैं अर्पिता एक बार फिर हाजिर हुई हूँ मेरी जवानी की प्यास की कहानी लेकर. सबसे पहले तो आपका बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने मेरी पहली कहानी मेरी कुंवारी चूत की पहली चुदाई को इतना प्यार दिया. मुझे इतने सारे […]
Full Story >>>

मामा ने बनाया मेरी बुर का भोसड़ा

दोस्तो नमस्कार ! मैं राज शर्मा चंडीगढ़ से एक बार फिर आप सभी के सामने अपनी एक नई कहानी को लेकर हाजिर हूं। आप सभी ने मेरी अपनी पिछली कहानियां पढ़ कर मुझे बहुत मेल व सुझाव दिए उसके लिए आप […]
Full Story >>>

शादी में प्यासी भाभी की चुदाई का मौक़ा-1

नमस्कार दोस्तो, मैं आपका अरमान लव, आपके लिए एक और हुई अपनी घटना को आपके लिए ले कर आया हूँ. जैसा कि मेरी पहले की कहानियों को पढ़ने के बाद कई महिलाओं एवं लड़कियों के ईमेल भी मुझे मिले, कई […]
Full Story >>>

नौकर की बीवी की चुदाई

मामी की गांड चोद कर सुहागरात मनायी-4 से आगे की कहानी : जब रूपा बर्तन साफ करके, पास के स्टोर रूम में जा रही थी, तो वो रूम के दरवाजे की दहलीज पर रुक गई. उधर थोड़ी देर रुक कर उसने […]
Full Story >>>

विधवा भाभी लंड की प्यासी

नमस्कार दोस्तो, बात आज से करीब दो साल पुरानी है. उस वक्त मेरी उम्र बाईस साल थी. जैसा कि आप सभी जानते ही हैं कि इस उम्र में चुदाई करने का कितना मन करता है. तो मेरा भी इस उम्र […]
Full Story >>>